डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में मूल्यपरक आयाम

तुलसी गुप्ता
शोधार्थिनी (हिंदी), सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान
प्रो. (डॉ.) दीपशिखा शर्मा
निर्देशिका, विभाग हिंदी, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

बाल साहित्य बच्चों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा नैतिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समकालीन हिन्दी बाल साहित्य में डॉ. उषा यादव का विशिष्ट स्थान है, क्योंकि उनकी रचनाधर्मिता मूल्य–आधारित दृष्टिकोण से प्रेरित है। उनकी साहित्यिक कृतियाँ केवल बच्चों का मनोरंजन ही नहीं करतीं, बल्कि उनमें नैतिक सिद्धांतों, सामाजिक उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक चेतना तथा मानवीय आदर्शों का विकास भी करती हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र में डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य के मूल्यपरक आयामों का सैद्धान्तिक अध्ययन किया गया है। इसमें उनकी रचनाओं में निहित नैतिक, शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मानवीय मूल्यों का विश्लेषण किया गया है तथा बच्चों के व्यक्तित्व–निर्माण में उनकी भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि डॉ. उषा यादव का बाल साहित्य मूल्य–शिक्षा का एक प्रभावी माध्यम है तथा उत्तरदायी एवं नैतिक नागरिकों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

मुख्य शब्द: *डॉ. उषा यादव, बाल साहित्य, मूल्य–शिक्षा, नैतिक मूल्य, मानवीय मूल्य, चरित्र–निर्माण्ज्ञं*

प्रस्तावना

मूल्य व्यक्ति के चरित्र तथा सामाजिक जीवन की आधारशिला होते हैं। वे मानव व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं, दृष्टिकोणों का निर्माण करते हैं तथा व्यक्ति को सही और गलत में भेद करने की क्षमता प्रदान करते हैं। बाल्यावस्था में मूल्य परिवार, समाज, शिक्षा और साहित्य के माध्यम से अर्जित किए जाते हैं। इनमें बाल साहित्य का विशेष स्थान है, क्योंकि यह मूल्यों को रोचक, कल्पनाशील तथा भावनात्मक रूप से आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करता है।

आधुनिक युग में मूल्यपरक साहित्य का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है, क्योंकि तीव्र तकनीकी विकास तथा सामाजिक परिवर्तन के कारण नैतिक एवं चारित्रिक विकास से संबंधित अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे समय में बाल साहित्य का दायित्व है कि वह भावी पीढ़ी तक आवश्यक मानवीय मूल्यों का संरक्षण और संवहन करे।

डॉ. उषा यादव समकालीन हिन्दी बाल साहित्य की प्रमुख साहित्यकारों में से एक हैं, जिनकी रचनाएँ मूल्य–आधारित शिक्षा से गहराई से जुड़ी हुई हैं। उनकी कहानियाँ, उपन्यास, कविताएँ तथा अन्य साहित्यिक कृतियाँ बच्चों में नैतिक संवेदनशीलता, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक समझ विकसित करने का सशक्त प्रयास करती हैं। सरल भाषा, यथार्थपरक परिस्थितियों और बाल–केंद्रित कथानकों के माध्यम से वे साहित्यिक अनुभवों में मूल्यों का सफल समावेश करती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में निहित मूल्यपरक आयामों का विश्लेषण करना तथा बाल विकास एवं समाजीकरण में उनके योगदान का मूल्यांकन करना है।

अध्ययन के उद्देश्य

- डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में मूल्यपरक दृष्टिकोण की अवधारणा का अध्ययन करना।
- उनकी साहित्यिक कृतियों में प्रतिबिंबित नैतिक मूल्यों का विश्लेषण करना।
- उनकी रचनाओं में प्रस्तुत सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अन्वेषण करना।
- चरित्र–निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास में उनके साहित्य की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- उनके बाल साहित्य में निहित मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

मूल्यपरक बाल साहित्य की अवधारणा

मूल्यपरक बाल साहित्य से अभिप्राय उन साहित्यिक कृतियों से है जो बच्चों में वांछनीय दृष्टिकोण, नैतिक सिद्धांतों तथा सामाजिक आदर्शों का विकास करती हैं। ऐसा साहित्य केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं होता, बल्कि बाल पाठकों को शिक्षित करने तथा सकारात्मक व्यवहार और उत्तरदायी नागरिकता की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करने का कार्य भी करता है।

शैक्षिक दर्शन के अनुसार मूल्य ऐसे स्थायी विश्वास हैं जो मानव व्यवहार तथा निर्णय–निर्माण को प्रभावित करते हैं। जब बाल साहित्य इन विश्वासों को सार्थक कथानकों, प्रेरणादायक पात्रों तथा यथार्थपरक परिस्थितियों के माध्यम से प्रस्तुत करता है, तब वह मूल्यपरक साहित्य बन जाता है।

मूल्य–आधारित साहित्य बच्चों में सहानुभूति, ईमानदारी, अनुशासन, उत्तरदायित्व, सहयोग तथा दूसरों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करता है। साथ ही यह भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा सामाजिक चेतना को भी सुदृढ़ करता है। डॉ. उषा यादव का बाल साहित्य इसी दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण है, क्योंकि वे मूल्यों को बिना उपदेशात्मक बनाए स्वाभाविक रूप से अपनी कथाओं में समाहित करती हैं।

डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में नैतिक मूल्य

ईमानदारी और सत्यनिष्ठा

डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में प्रतिबिंबित सबसे प्रमुख मूल्यों में से एक ईमानदारी है। उनकी कहानियाँ

सत्य बोलने तथा व्यक्तिगत आचरण में सत्यनिष्ठा बनाए रखने के महत्त्व को रेखांकित करती हैं।

उनके साहित्य में ईमानदार पात्र विश्वास, सम्मान और सफलता प्राप्त करते हैं, जबकि असत्य और छल का मार्ग अपनाने वाले पात्र कठिनाइयों और निराशा का सामना करते हैं। ऐसे चित्रण बच्चों को यह समझाते हैं कि सत्यनिष्ठा केवल एक नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन की व्यावहारिक आवश्यकता भी है।

उत्तरदायित्व और कर्तव्यबोध

उत्तरदायित्व उनकी रचनाओं का एक अन्य महत्त्वपूर्ण मूल्य है। बच्चों को परिवार, विद्यालय, समाज तथा पर्यावरण के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करने के लिए प्रेरित किया जाता है। उनके पात्र अपने कार्यों में प्रतिबद्धता, जवाबदेही तथा समर्पण का परिचय देते हैं।

ऐसे चित्रण बाल पाठकों को उत्तरदायी व्यवहार के महत्त्व तथा उसके व्यक्तिगत एवं सामाजिक लाभों को समझने में सहायता करते हैं।

अनुशासन और आत्मसंयम

डॉ. उषा यादव का साहित्य जीवन में सफलता प्राप्त करने तथा व्यवस्था बनाए रखने के लिए अनुशासन के महत्त्व को रेखांकित करता है। उनकी कहानियाँ समयपालन, परिश्रम, दृढ़ता और आत्मसंयम जैसी आदतों को विकसित करने के लिए प्रेरित करती हैं।

ये मूल्य चरित्र–निर्माण में सहायक होते हैं तथा बच्चों को भविष्य की चुनौतियों का सामना आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ करने के लिए तैयार करते हैं।

डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में मानवीय मूल्य

करुणा और दयालुता

करुणा डॉ. उषा यादव के साहित्य में प्रतिबिंबित प्रमुख मानवीय मूल्यों में से एक है। उनकी कहानियों में दया, उदारता तथा दूसरों की सहायता करने की भावना का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। बच्चे सीखते हैं कि जरूरतमंदों की सहायता करना तथा दूसरों के दुख–दर्द के प्रति संवेदनशील होना एक महत्त्वपूर्ण मानवीय गुण है।

ऐसी कथाएँ भावनात्मक परिपक्वता का विकास करती हैं तथा मानवीय दृष्टिकोण को सुदृढ़ बनाती हैं।

सहानुभूति और समझ

सहानुभूति व्यक्ति को दूसरों की भावनाओं को समझने और अनुभव करने की क्षमता प्रदान करती है। भावनात्मक रूप से समृद्ध परिस्थितियों तथा यथार्थपरक पात्रों के माध्यम से डॉ. उषा यादव बच्चों को विभिन्न दृष्टिकोणों से जीवन को देखने के लिए प्रेरित करती हैं।

यह मूल्य बच्चों में सहिष्णुता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा स्वस्थ सामाजिक संबंधों के लिए आवश्यक पारस्परिक कौशलों का विकास करता है।

मानवीय गरिमा का सम्मान

उनका साहित्य प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा और सम्मान के प्रति सजग दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, चाहे उसकी आयु, सामाजिक स्थिति या पृष्ठभूमि कुछ भी हो। ऐसे मूल्य बच्चों में लोकतांत्रिक चेतना तथा मानवतावादी दृष्टिकोण के विकास में सहायक होते हैं।

डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में सामाजिक मूल्य

सहयोग और टीम भावना

डॉ. उषा यादव की अनेक कहानियाँ सामूहिक प्रयास और सहयोग के महत्त्व को रेखांकित करती हैं। उनके बाल पात्र समस्याओं का समाधान करने और साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर कार्य करते हैं। ऐसी कथाएँ बच्चों में टीम भावना का विकास करती हैं तथा यह शिक्षा देती हैं कि सफलता अक्सर सहयोग और पारस्परिक समर्थन का परिणाम होती है।

सामाजिक उत्तरदायित्व

उनका साहित्य बच्चों को समाज के प्रति अपने दायित्वों को पहचानने के लिए प्रेरित करता है। सामुदायिक कल्याण, पर्यावरण संरक्षण तथा नागरिक चेतना से जुड़े विषय उनकी रचनाओं में बार–बार दिखाई देते हैं। सामाजिक सहभागिता के महत्त्व को रेखांकित करके उनकी रचनाएँ बच्चों को उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करती हैं।

समानता और न्याय

डॉ. उषा यादव का साहित्य निष्पक्षता, समानता और न्याय जैसे आदर्शों को भी प्रस्तुत करता है। बच्चों को दूसरों के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करने तथा भेदभाव और पूर्वाग्रह का विरोध करने की प्रेरणा दी जाती है। ये मूल्य लोकतांत्रिक चेतना तथा सामाजिक समरसता के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में सांस्कृतिक मूल्य

भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, जिसकी आधारशिला मानवीय मूल्यों, पारिवारिक आदर्शों, सामाजिक समरसता तथा आध्यात्मिक चेतना पर आधारित है। बाल साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण दायित्व बच्चों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराना तथा उनमें सांस्कृतिक गौरव की भावना विकसित करना है। डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में भारतीय संस्कृति, परम्पराओं, रीति–रिवाजों तथा लोकजीवन का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उनकी रचनाएँ बच्चों को भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता और उसकी मूलभूत विशेषताओं से अवगत कराती हैं।

उनकी कहानियों और कविताओं में विभिन्न त्योहारों, पारम्परिक उत्सवों, लोकाचारों, पारिवारिक संस्कारों तथा सामाजिक व्यवहारों का चित्रण इस प्रकार किया गया है कि बच्चे मनोरंजन के साथ–साथ अपनी सांस्कृतिक

जड़ों से भी जुड़ते हैं। दीपावली, होली, रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस तथा अन्य सांस्कृतिक अवसरों से जुड़े प्रसंग बच्चों में उत्साह और सांस्कृतिक चेतना का विकास करते हैं। इन रचनाओं के माध्यम से बच्चों को यह समझने का अवसर मिलता है कि भारतीय संस्कृति केवल उत्सवों और परम्पराओं का समूह नहीं है, बल्कि यह जीवन–मूल्यों, सह–अस्तित्व, सहिष्णुता और मानवता की भावना का भी प्रतीक है।

डॉ. उषा यादव का साहित्य बच्चों में अपनी भाषा, संस्कृति और परम्पराओं के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न करता है। वैश्वीकरण और पाश्चात्य प्रभावों के इस दौर में जब अनेक बच्चे अपनी सांस्कृतिक पहचान से दूर होते जा रहे हैं, तब उनकी रचनाएँ भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार उनका साहित्य बच्चों की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करने तथा उनमें अपनी विरासत के प्रति गर्व और सम्मान विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है।

पारिवारिक मूल्य

भारतीय संस्कृति में परिवार को सामाजिक जीवन की मूल इकाई माना गया है। परिवार ही वह प्रथम संस्था है जहाँ बच्चे जीवन के प्रारम्भिक संस्कार, मूल्य और व्यवहार सीखते हैं। डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में पारिवारिक जीवन का अत्यन्त सजीव और संवेदनशील चित्रण मिलता है। उनकी रचनाओं में परिवार को केवल एक सामाजिक संस्था के रूप में नहीं, बल्कि प्रेम, सुरक्षा, सहयोग और भावनात्मक विकास के केन्द्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उनकी कहानियों में माता–पिता, दादा–दादी, भाई–बहन तथा अन्य पारिवारिक सदस्यों के बीच स्नेहपूर्ण संबंधों का चित्रण बच्चों को पारिवारिक एकता और सहयोग का महत्त्व समझाता है। वे परिवार के भीतर संवाद, विश्वास और पारस्परिक सम्मान की भावना को विशेष महत्त्व देती हैं। बच्चों को यह संदेश दिया जाता है कि परिवार केवल अधिकारों का नहीं, बल्कि कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का भी केन्द्र है।

डॉ. उषा यादव की रचनाओं में माता–पिता और गुरुजनों के प्रति सम्मान को एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनके साहित्य में यह विचार बार–बार उभरकर आता है कि बड़ों का सम्मान करना, उनके अनुभवों से सीखना तथा उनके मार्गदर्शन को स्वीकार करना जीवन में सफलता और संतुलन प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, परिवार के सदस्यों के बीच सहयोग, त्याग, प्रेम और संवेदनशीलता के मूल्य भी उनकी रचनाओं में प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्त हुए हैं।

आज के समय में जब संयुक्त परिवारों का स्वरूप तेजी से बदल रहा है और बच्चों का पारिवारिक परिवेश सीमित होता जा रहा है, तब डॉ. उषा यादव का साहित्य पारिवारिक मूल्यों की पुनर्स्थापना और संरक्षण की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनकी रचनाएँ बच्चों को पारिवारिक संबंधों के महत्त्व तथा भावनात्मक सहयोग की आवश्यकता का बोध कराती हैं।

राष्ट्रीय चेतना

राष्ट्रीय चेतना किसी भी राष्ट्र की एकता, अखण्डता और प्रगति का आधार होती है। बाल साहित्य का दायित्व केवल बच्चों का मनोरंजन करना नहीं है, बल्कि उनमें राष्ट्र के प्रति प्रेम, सम्मान और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना भी है। डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

उनकी अनेक रचनाएँ बच्चों को देशभक्ति, राष्ट्रीय गौरव तथा राष्ट्र–निर्माण के आदर्शों से परिचित कराती हैं। वे बच्चों को स्वतंत्रता सेनानियों, राष्ट्रीय नायकों और महान व्यक्तित्वों के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। उनके साहित्य में राष्ट्रप्रेम को संकीर्ण दृष्टिकोण के रूप में नहीं, बल्कि मानवता, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय विकास से जुड़े व्यापक मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

डॉ. उषा यादव की रचनाएँ बच्चों में यह भावना विकसित करती हैं कि राष्ट्र की प्रगति प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सद्भाव, अनुशासन और सार्वजनिक संपत्ति के संरक्षण जैसे विषयों के माध्यम से वे बच्चों को सक्रिय और उत्तरदायी नागरिक बनने की प्रेरणा देती हैं। इस प्रकार उनका साहित्य राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है तथा बच्चों को राष्ट्रहित को व्यक्तिगत हित से ऊपर रखने की शिक्षा प्रदान करता है।

इन मूल्यों के माध्यम से बालकों में देश के प्रति सम्मान, सामाजिक उत्तरदायित्व और लोकतांत्रिक चेतना का विकास होता है, जो उन्हें भविष्य में जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है।

डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में शैक्षिक मूल्य

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम है। बाल साहित्य शिक्षा का एक प्रभावशाली साधन है, क्योंकि इसके माध्यम से बच्चे सहज, रोचक और अनुभवात्मक ढंग से सीखते हैं। डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य में शैक्षिक मूल्यों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनकी रचनाएँ बच्चों को केवल जानकारी प्रदान नहीं करतीं, बल्कि उनमें जिज्ञासा, चिंतनशीलता, रचनात्मकता और ज्ञान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास भी करती हैं।

उनकी कहानियों और कविताओं में बच्चों को प्रश्न पूछने, नए अनुभव प्राप्त करने तथा अपने आसपास की दुनिया को समझने के लिए प्रेरित किया जाता है। वे बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने पर बल देती हैं, जिससे वे अंधविश्वासों और रूढ़ धारणाओं से मुक्त होकर तार्किक एवं विवेकपूर्ण सोच विकसित कर सकें। यह दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप है, जो बच्चों में आलोचनात्मक चिंतन और समस्या–समाधान क्षमता विकसित करने पर बल देता है।

डॉ. उषा यादव का साहित्य आत्मनिर्भरता, परिश्रम, अनुशासन तथा निरन्तर सीखने की प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित करता है। उनके पात्र कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य और परिश्रम के माध्यम से सफलता प्राप्त करते हैं, जिससे बच्चों को यह शिक्षा मिलती है कि सफलता का आधार निरन्तर प्रयास और सकारात्मक दृष्टिकोण है।

उनकी रचनाओं में शिक्षा को केवल परीक्षा और अंक प्राप्ति तक सीमित नहीं माना गया है, बल्कि उसे जीवन को समझने, समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने तथा बेहतर नागरिक बनने की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार उनका साहित्य बच्चों में ज्ञान के साथ–साथ जीवन–मूल्यों का भी विकास करता है।

समकालीन शिक्षा–व्यवस्था में जहाँ समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, रचनात्मकता और मूल्य–आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है, वहाँ डॉ. उषा यादव का बाल साहित्य अत्यन्त प्रासंगिक सिद्ध होता है। उनकी रचनाओं में निहित शैक्षिक मूल्य बच्चों को जागरूक, विवेकशील, संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं। इसलिए उनका साहित्य शिक्षा और चरित्र–निर्माण के समन्वित स्वरूप का उत्कृष्ट उदाहरण माना जा सकता है।

व्यक्तित्व विकास में मूल्यपरक साहित्य की भूमिका

डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य के मूल्यपरक आयाम व्यक्तित्व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सकारात्मक आदर्श पात्रों और सार्थक जीवनानुभवों के माध्यम से उनकी रचनाएँ निम्नलिखित क्षेत्रों में योगदान देती हैं–

1. नैतिक विकास
2. भावनात्मक परिपक्वता
3. सामाजिक समायोजन
4. सांस्कृतिक चेतना
5. बौद्धिक विकास
6. चरित्र–निर्माण

ऐसे साहित्य से जुड़ने वाले बच्चों में सकारात्मक दृष्टिकोण, नैतिक आचरण तथा समाज और स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित होने की अधिक संभावना होती है।

समकालीन प्रासंगिकता

समकालीन विश्व में बच्चे तकनीक, मीडिया तथा वैश्वीकरण के माध्यम से विविध प्रकार के प्रभावों के संपर्क में आते हैं। यद्यपि ये प्रभाव सीखने और विकास के नए अवसर प्रदान करते हैं, फिर भी वे मूल्य–निर्माण से जुड़ी चुनौतियाँ भी उत्पन्न करते हैं।

ऐसे परिप्रेक्ष्य में डॉ. उषा यादव का मूल्यपरक बाल साहित्य अत्यन्त प्रासंगिक सिद्ध होता है। उनकी रचनाओं में प्रतिपादित ईमानदारी, उत्तरदायित्व, करुणा, सहयोग, सम्मान तथा सांस्कृतिक चेतना जैसे मूल्य आज भी व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण के लिए आवश्यक हैं।

उनका साहित्य पारम्परिक मूल्यों और समकालीन आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करता है, जिससे

वह वर्तमान पीढ़ी के लिए भी अत्यन्त सार्थक बन जाता है।

निष्कर्ष

मूल्यपरक आयाम डॉ. उषा यादव के बाल साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक हैं। उनकी साहित्यिक कृतियाँ नैतिक, मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक मूल्यों का बाल–अनुकूल और रोचक समन्वय प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाओं के माध्यम से बच्चे ईमानदारी, उत्तरदायित्व, करुणा, सहयोग, सम्मान तथा सामाजिक चेतना जैसे मूल्यों को आत्मसात करते हैं और साथ ही साहित्यिक आनंद भी प्राप्त करते हैं।

हिन्दी बाल साहित्य में डॉ. उषा यादव का योगदान केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। उनकी रचनाएँ मूल्य–शिक्षा और चरित्र–निर्माण के प्रभावी साधन के रूप में कार्य करती हैं तथा उत्तरदायी, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से जागरूक नागरिकों के निर्माण में सहायक सिद्ध होती हैं। परिणामस्वरूप, उनका साहित्य समकालीन हिन्दी बाल साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है तथा बदलते सामाजिक और शैक्षिक परिवेश में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

संदर्भ

1. यादव, ऊषा। बाल साहित्य के सरोकार। नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन, 2016।
2. यादव, ऊषा। हिंदी बाल साहित्य रू विविध आयाम। नई दिल्लीरू नमन प्रकाशन, 2018।
3. सिंह, सुरेन्द्र विक्रम। हिंदी बाल साहित्य रू परंपरा, प्रगति और प्रयोग। नई दिल्लीरू साहित्य अकादेमी, 2015।
4. पाण्डेय, रामशकल। बाल मनोविज्ञान और बाल साहित्य। इलाहाबादरू लोकभारती प्रकाशन, 2011।
5. शर्मा, रामनाथ। शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा के सामाजिक आधार। मेरठरू सूर्य पब्लिकेशन्स, 2012।
6. अग्रवाल, अमरनाथ। बाल साहित्य रू रचना और समीक्षा। नई दिल्लीरू प्रभात प्रकाशन, 2010।
7. श्रीवास्तव, कृष्णा। समकालीन हिंदी बाल साहित्य। नई दिल्लीरू किताबघर प्रकाशन, 2013।
8. मिश्र, सत्यदेव। मूल्य शिक्षा और बाल साहित्य। नई दिल्लीरू अनामिका पब्लिशर्स, 2017।
9. कौर, मंजू। हिंदी बाल साहित्य रू विकास एवं मूल्यांकन। नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन, 2014।
10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी)। भाषा शिक्षण संबंधी स्थिति–पत्र। नई दिल्लीरू एनसीईआरटी, 2006।